समाजीकरण में शिक्षा का योगदान एक अध्ययन

डॉ० चेतन कुमार

प्रह्लादपुर, जिला – मुजफ्फरपुर, बिहार

सार

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है और अपना विकास करता है। समाज के बिना उसका विकास असंभव है तथा वह समाज की परम्पराओं, विचारों रहन सहन के तरीकों को अपनाता है। इस प्रकार से कह जा सकता है यदि वह समाज के अनुसार अपना जीवन नही बीतता तो उसका समुचित विकास नहीं हो सकता । इस प्रकार वह समाज की परम्पराओं और मान्यताओं को अपनाकर ही सामाजिक बनता है। इस प्रकार समाजीकरण का अभिप्राय सीखने की उस प्रक्रिया से है जो बाल के जन्म के बाद शरू हो जाती है और जीवन भर सामाजिक गुणों को सीखने और उसे व्यवहार मे ग्रहण करने में लगती है और वह सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने लगती है। इस प्रकार से यह एक प्रक्रिया जिसमें मानव समाज द्वारा सिखता है जो उसके आस पास समाज में दिखता है अर्थतः एक व्यक्ति का समाजीकरण सामाजिक व्यवहार को सीखना है।

मुख्य शब्द : सामाजिक, परम्पराओं, मान्यताओं, व्यवहार, समाजीकरण इत्यादि।

प्रस्तावना

सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि समाजीकरण का अभिप्राय सीखने की उस प्रक्रिया से है जिसमें जन्म के बाद जीव क्रमशः सामाजिक गुणों को सीखने के परिणामरूवरूप एक सामाजिक प्राणी या मानव के रूप में परिवर्तित होने लगता है अर्थात् यह एक प्रकार का सीखना है जिसके द्वारा बालक उन मांगों के अनुरूप कार्य करता है जो उसके समाज में अपेक्षित है। अतः समाजीकरण में एक ओर व्यक्ति विशेष होता है और दूसरी ओर सामाजिक मूल्य और मान्यताएं। व्यक्ति – विशेष की इन मूल्यों और मान्यतओं तक पहुँचने की चेष्टा या कोशिश की समाजीकरण है। संक्षेप में समाजीकरण सामाजिक व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया को कहते हैं।

समाजीकरण की परिभाषाएँ :

- **जाँनसन के मतानुसार ने कहा है कि:-** *"समाजीकरण एक प्रकार का सीखना है जो सीखने वाले को सामाजिक कार्य करने योग्य बनाता है।"*

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-10 No.02 October 2020

- **हार्टल और हार्टले ने समाजीकरण की परिभाषा देते हुए कहा है कि: –** *"यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आप को समुदाय के आदशों के अनुकूल बनाता है।"*
- **ग्रिन के अनुसार :–** *"समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं, निज स्वरूप और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।"*

समाजीकरण की प्रक्रिया

व्यक्ति समाज में जन्म लेने के बाद धीरे धीरे सामाजिक वातावरण में बड़ा होता है। वह सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषततओं को ग्रहण करके समाज का एक क्रियाशील सदस्य बनता है। अतः समाजीकरण एक अर्जित प्रक्रिया है। सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया ही समाजीकरण कही जाती है। जिन तरीकों, पद्धतियों, दबावों आदि के फलस्वरूप व्यक्ति का समाजीकरण होता है, उन्हे हम समाजीकरण की प्रक्रियाएँ कहते हैं। ये मुख्यतः दो प्रकार की हैं –

(क) समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रियाएं।

(ख) समाजीकरण की गौण प्रक्रियाएँ।

(क) समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रियाएँ –

समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रियाओं में सुझाव, पालन – पोषण की विधियाँ तथा अनुकरण आदि की चर्चा की जाती है।

- **सुझाव –** बच्चा विभिन्न प्रकार के सामाजिक व्यवहार को परिवार के लोगों से प्राप्त सुझवों से सीखता है। सुझावों में तर्क- वितर्क का कोई स्थान नहीं है। घर के बड़े-बूढ़े और माता – पिता बच्चों को कुध नियमों,प्रथाओं तथा परम्पराओं को अपनाने के सुझाव देते हैं और बच्चा उन सामाजिक नियमों, मूल्यों तथा विचारों को ग्रहण करकें समाज का सदस्य बन जाता है।
- **पालन पोषण की विधियॉ –** जन्म काल मे बच्चा असहाय होता है। माता – पिता ही उसका पालन पोषण करते हैं। विशेषकर माँ की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। वही उसे दूध पिलाती है, उसकी देखभाल करती है और उससे लाड़ प्यार करती है। पालन-पोषण की

Copyright @ 2020 Authors

विधि बच्चे के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, परंतु पालन – पोषण की विधियाँ अलग अलग होती हैं। यदि बच्चे का सही प्रकार से पालन – पोषण होगा तो उसका समाजीकरण भी सहज होगा।

- **अनुकरण –** बच्चा चेतन अथवा अचेतन रूप में आस पास के लोगों के व्यवहार की नकल करता है। यही कारण है कि समाजीकरण की प्रक्रिया में अनुकरण का विशेष महत्व माना गया है। अनुकरण समाजीकरण की प्रथम सीढ़ी है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, वह अपने माता-पिता, सगे- सम्बन्धियों, पड़ोसियों, अध्यापकों तथा अन्य लोगों के सम्पर्क मे आता है और उनके व्यवहार का अनुकरण करके समाज से जुड़ जाता है। यही उसकी समाजीकरण की प्रक्रिया है।

(ख) समाजीकरण की गौण प्रक्रियाएँ: –

- **प्रतियोगिता** – प्रतियोगिता का अर्थ है दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा किसी वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास करना। प्रतियोगिता समाजीकरण को बढ़ावा देती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि समाज में उसका मान सम्मान और आदर हो। वह सामाजिक व्यवहार को सीखने का प्रयास करता है। इसके लिए वह प्रतियोगिता में भी भाग लेता है।
- **सहयोग** – सहयोग का अर्थ है दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा मिलकर काम करना। छोटी आयु में ही बच्चे सहयोग की भावना को सीख जाते हैं। सर्वप्रथम बच्चा अपने परिवार के सदस्यों का सहयोग करता है। आगे चलकर वह अपनी आयु के बच्चों का सहयोग करता है और उसका सहयोग लेता है। सहयोग द्वारा ही बच्चा बड़ा होकर अंसंख्य समाजिक परम्पराओं, मूल्यों तथा प्रथाओं को सीखता है।
- **संघर्ष** – संघर्ष का अर्थ है दो व्यक्तियों अथवा दो समूहों के बीच किसी वस्तु को पाने की होड़। समाज में आगे बढ़ने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ता है। इससे व्यक्ति का व्यवहार प्रभावित होता है, पंस्तु संधर्ष के कारण व्यक्ति का समाजकिसण भी होता है। अतः संघर्ष निश्चय ही समाज का आवश्यक तत्व। है और प्रत्येक। व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ता है।

Copyright @ 2020 Authors

- **तादात्मीकस** – एक व्यक्ति द्वारा स्वंय को दूसरे व्यक्ति के अनुसार ढालने की प्रक्रिया को तादात्मीकरण स्थापित करते हैं। फलस्वरूप वे समाज में रहकर समाज के रीति-रिवाजों, पसम्पराओं,आदर्शों तथा व्यवहारों को सीख जाते हैं। अतः तादात्मीकाण समाजीकरण की प्रक्रिया में विशेष महत्त्व रखता है।

समाजीकरण का शिक्षा में योगदान –

समाजीकरण में शिक्षा का विशेष योगदान होता है –

- **व्यक्तित्व का विकास –** जब बच्चा स्कूल अथवा काँलेज में दाखिला लेता है तो उस के बाद ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास होने लगता है। यहाँ बच्चा बहुत से लोगों के सम्पर्क मे आता है जैसे शिक्षको, मित्रो आदि द्वारा जैसे – वह अध्यापक तथा पुस्तकों से बहुत कुछ ज्ञाण प्राप्त करता है। सीखता है इस प्रकार इन सभी द्वारा उसके सामाजीकरण में सहायता मिलती है।
- **अधिकारों तथा कर्तव्यों का ज्ञान –** शिक्षा की मददत से बच्चा अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्य को जान जाता है। और फिर वह अपने कर्तव्यो का पालन करने लगते है और अपने अधिकरों को समझ जाते है। जिस से उसका समाजीकरण होता है।
- **संस्कृति का ज्ञान –** शिक्षा द्वारा ही बच्चे अपनी संस्कृति अर्थात् अपनी रीति – रिवाजों, परम्पराओं, धार्मिक मान्यतओं आदि के बारे में जानते है। अतः संस्कृति भी बच्चों के समाजीकरण में बढ़ावा देती है।
- **नियमों का पालन –** विधालय में शिक्षा प्राप्त करने के साथ साथ वह विद्यालय द्वारा दिए गए नियमो का पालन करते है। यही नही इस करण से वह अनुशासन में रहने लगते है जिससे बच्चों का समाजिकरण होता है।
- **विभिन्न लोंगो से सम्पर्क –** स्कूल अथवा कॉलेज में प्रवेश लेने के बाद विधार्थी अनेक लोगों के संपर्क में आता है इस प्रकार से अनेक लोगों से उसका सामाजिक संपर्क बन जाता है। स्कूल और कालेज समाजीकरण के मुख्य माध्यम हैँ।

Copyright @ 2020 Authors

- **समायोजन –** शिक्षा द्वारा बच्चों में समायोजन की भावना विकसित होती है। शिक्षाकाल में बालक एक दूसरे के साथ रहते है और अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। अतः इस करण से बच्चे अपना समायोजन करना सीख लेते हैं।

उपसंहार

समाजीकरण में शिक्षा की बहुत महत्वपूर्णता है। विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते हुए बलाकों में बहुत से गुणों का विकास होता है। वे विभिन्न रीति रिवाजो, परम्पराओ, अधिकरों, कर्तव्य, भावनाओं आदि द्वारा अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं। समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो नवजात शिशु को सामाजिक प्राणी बनाती है। इस प्रक्रिया के अभाव में व्यक्ति सामाजिक प्राणी नहीं बन सकता। इसी से सामाजिक व्यक्तित्व का विकास होता है। सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत के तत्वों का परिचय भी इसी से प्राप्त होता है। समाजीकरण से न केवल मानव जीवन का प्रभाव अखण्ड तथा सतत रहता है, बल्कि इसी से मानवोचित गुणों का विकास भी होता है और व्यक्ति सुसभ्य व सुसंस्कृत भी बनता है। संस्कृति का हस्तान्तरण भी समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा ही होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के बिना व्यक्ति सामाजिक गुणों को प्राप्त नहीं कर सकता है। अत: यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती है। समाजीकरण की प्रक्रिया में उन मानकों, मूल्यों और विश्वासों को प्राप्त किया जाता है, जिन्हें समाज में महत्व दिया जाता है। इस तरह यह सांस्कृतिक मूल्यों, प्राथमिकताओं और प्रतिमानों को बच्चों के व्यवहार में संक्रमित करने की प्रक्रिया है। यह विभिन्न प्रक्रियाओं, शैक्षिक संस्थाओं और लोगों द्वारा सम्पन्न होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

[1] जी.एच.मीड (1934), माइंड, सेल्फ़ ऐंड सोसाइटी, शिकागो युनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो.

[2] एच.एम. जानसन (1963), सोसियोलॅजी : अ सिस्टमेटिक इंट्रोडक्शन, रॉटलेज ऐंड कीगन पाल, लंदन.

[3] के. डेविस (1960), ह्यूमन सोसाइटी, मैकमिलन, न्यूयॉर्क.

[4] पार्संस ऐंड बेल्स (1960), फैमिली सोशलाइजेशन ऐंड इंटरेक्शन प्रासेसेज़, द फ़्री प्रेस, ग्लेनको इलीनॉय.

Copyright @ 2020 Authors

[5] सी.एच. कूले (1922), ह्यूमन नेचर ऐंड द सोशल आर्डर, स्क्रिबनर, न्यूयॉर्क.

[6] जॉनसन. (2013). समाजीकरण की प्रक्रिया-परिभाषा.

[7] Sharma, V. (2018). शिक्षा और समाजीकरण का उद्देश्य.

[8] नारायण (2018). समाजीकरण में शिक्षा की क्या भूमिका है.

Copyright @ 2020 Authors